एक थे बुध्द

एक थे... " बुध्द "... शुध्दोधन के बेटे
एक थे... " बुध्द "... घट-घट में लेटे
एक थे " बुध्द " भोग व शरीर में रमा हुआ
एक थे " बुध्द "... हर प्राणी से एकत्व भाव से जुड़ा हुआ
एक थे... " बुध्द "... जिसने बीमारी, वृध्दावस्था और मृत्यु को देखा
एक थे... " बुध्द "... जिसने कहा, चलना जब तुम चल रहे हो।
खाना जब तुम खा रहे हो।
“ बुध्द ”... शब्द का पर्याय है - " एकात्मकता "
अपने भीतर के शून्य से एकात्मकता, अपने बाह्य रुप से एकात्मकता।
कारण-कार्य सिध्दान्त को समझ लेना " बुध्दत्व " है।
जहाँ " संघर्ष " शब्द के लिए कोई स्थान न हो, वह है " बुध्दत्व "।
विज्ञान सम्मत विधियों को ग्रहण करना है, " बुध्दत्व "।
" भय " - " दुख " - " संशय " - " उत्तेजना " - ऐसी शब्दावली जिस घट में ना हो वह है " बुध्दत्व "
" प्रतिक्षण " - " पखिर्तमनशील " - रुप बदलता देख
बाह्य एवं अंतर - मंद मुस्कान के साथ अवलोकन करने वाला - " शाश्वत " कोमल तत्व है - " बुध्दत्व "
प्रत्येक मानव " बुध्दत्व " पा सकता है।
प्रत्येक मानव को " बुध्दत्व " पाना है।
नवयुग है " बुध्दत्व ” पाने का।
बुध्द वंदनीय है। सभी बुध्द वंदनीय है।
अब तक जो " बुध्द " बने वे वंदनीय है।
आगे जो बनने जा रहे हैं - वे वंदनीय है।
समस्त बुध्दों का नवयुग में स्वागत है।
आपका इस समय का " बुध्द "
ब्रह्मर्षि पत्री जी